Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VIII, Issue No. XVI, Oct-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

रविदास की वाणी में मानववाद

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VIII, Issue No. XVI, October-2014, ISSN 2230-7540

रविदास की वाणी में मानववाद

Dr. Sarita Batra

S.M.S. Khalsa Labana Girls College, Barara (Ambala)

---------------------------------x---------------------------------

मानववाद अंग्रेजी भाषा के "ह्यूमैनिज्म" ;भ्नउंदपेउद्ध का हिन्दी रूपान्तर है।1 ह्यूमैनिज्म शब्द की उत्पति लैटिन भाषा ह्यूम्नस' से हुई है। इस प्रकार 'ह्यूमन' शब्द में 'इज्म' प्रत्यय लगने से "ह्यूमैनिज्म" अर्थात मानववाद शब्द की उत्पति हुई।

'मानवता और समाजवाद' पुस्तक की प्रस्तावना में मानववाद के विषय में एस. पोपोव ने लिखा है, घ्मानववाद एक सैद्वान्तिक विचार पद्वति के रूप में पश्चिमी यूरोप में नव–जागरण काल में सामन्तवाद के विरूद्व जन–संघर्श के समय प्रकट हुआ। मानववाद,जिसे लैटिन "ह्यूमैनिज्म" के आधार पर यूरोप में "ह्यूमैनिज्म" कहा गया इसी युग में पन्द्रहवी और सोलहवीं सदी में सर्वमान्य हुआ। परन्तु इसके आदर्श मानव को प्रकृति की सबसे अधिक मूल्यवान देन स्वीकार करना, मानवीय परिश्रम का सम्मान, मानवीय शक्ति एवं बौद्विकता में विश्वास, मनुष्य के स्वतन्त्र का विकास का अधिकार आदि उतने ही प्राचीन है जितनी की सभ्यता। मानववाद के मुख्य स्त्रोत दास युग और बाद में सांमती युग के समाज में मनुष्यों की चेतना के रूप में देखे जा सकते हैं।2

हिन्दी साहित्य कोश में मानववाद के बारे में कहा गया है "मानववादी ये मानते है कि पाश्विक एवं दैवीय गुणों के मध्य कुछ ऐसा भी है, जो पूर्ण रूप से मानवीय है और उसे नैतिकता, कला, सौन्दर्यबोध तथा अन्य आचार–विचार का माप मानना चाहिए।"3

मानव की पवित्रता और सज्जन मान भाव के द्वारा मनुष्य का मूल्यांकन होता है। इससे मानव गुण न केवल अपना अपितु समस्त मानव जाति का मार्गदर्शन करता है और मनुष्य जीवन लक्ष्य की पूर्ति से सहायक होते हैं। वेद–शास्त्रों में सेवा, दान, परहित कामना, सत्य आचरण, संतोष, अपरिग्रह आदि को आंतरिक शुचिता के लिए महत्वपूर्ण बताया है। इसलिए मनुष्य को काम, ओध, लोभ, मोह, ईर्ष्या वैर से रहित होकर मानवीय भावना से प्रेरित होकर हमें मानवता की सेवा करनी चाहिए।

आज कोई भी राष्ट्र मानव चिंतन की अवहेलना नहीं कर सकता। मानव चिंतन विशेष जाति–धर्म, समाज, राष्ट्र तक सीमित न रहकर विश्वव्यापी हो गया है। आज पूरा विश्व एक विश्वग्राम बन गया है। इसलिए समस्त विश्व में मानव हितों की रक्षा के लिए आवश्यक है कि व्यवस्थित चिंतन से मानवतावाद की उदघोषणा हो। संत साहित्य के सभी मर्मज्ञ इस बात से सहमत है कि भारतीय आत्मा का विकास संत साहित्य में हुआ। संत साहित्य ने न केवल तत्कालीन परिस्थितियों में व्यापक रूढ़िवादी परम्पराओं का विरोध किया अपितु समाज में आने वाली पीढ़ियों को मानवतावाद का पाठ पढ़ा कर स्वस्थ चिंतन प्रदान कर मानव–मानव में भावात्मक एकता का प्रचार किया। हिन्दी साहित्य के इतिहास में धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में नवीन चेतना का स्वर फैलाने का श्रेय संत रविदास को जाता है। जिसने मानव मन को संकीर्णता से मुक्त कर 'च–नीच, जाति, धर्म भेद, रूढिवादी परम्परा के खिलाफ आवाज उठाकर मानव चिंतन पर बल दिया। मानवतावादी वह दृष्टिकोण है। जिसमें मानव की अनुभूतियों, समाज के प्रति संवेदना, भावों, व्यक्तिगत आदर्श नीतियों, परोपकार की भावना, करूणा, मैत्री भाव आदि लक्षणों से मुक्त हो। जो ऊँच–नीच, जाति–पाति के भेदभाव को भुलाकर, अहं, काम, ओध, लोभ, मोह, वैर, परिग्रह, ईर्ष्या, निन्दा आदि विकारों को त्याग कर सभी जीव को सर्वज्ञ ईश्वर का अंश मानकर मानवकल्याण की भावना निहित हो।

भक्तिकाल में समाज मे व्याप्त विसंगतियों के दौर में मानवीय कल्याण की भावना संत परम्परा का प्रमुख लक्ष्य था। संत रविदास ने समाज में सुधार लाने की चेष्टा संत कबीर की तरह खंडनात्मक पद्धति से नहीं की अपितु विनम्रता से मानव मन की दुष्प्रवृतियों का परिष्कार करते है, जिसके कारण समाज में कुरीतियाँ उत्पन्न हुई है। वह स्वयं को चमार कह कर वास्तविकता से मुँह नहीं मोड़ते।

ऐसी मेरी जाति विश्यात चमार,

हिरदै राम गोबिन्द गुन मारं।

सुरसरी जल लीया कृत बारूणी रे

जैसे संत जन करत नहीं पान।4

अनेक अधम जीव नां गुणि उधरे,

पतित पावन भये परसिसारं।

भणत रैदास ररंकार गुण गावता

संत साधु भये सहजि पार।5

मानव जन्म से ऊँच–नीच नहीं, कर्म से ऊँचा या नीचा होता है। हृदय में गुणों त्रिगुण के नाशक भगवान है। भगवान का नाम लेकर अनेक अधम जीवों का उद्धार हुआ। सार तत्व को प्राप्त कर पतित पावन हो गए।

"हम अपूजि पूजि भये हरि तैं, नाम अनुपम गाया रे।

हम अपराधी नीच पर जम्मै, कुटुम्ब लाजकरै हंसीरे।"6

अर्थात नीच घर में जन्म लेने के कारण नीच समझते थे, परन्तु प्रभु भक्ति से अपूज्य होते हुए भी सम्मानित हुए। गुरू रविदास के सामाजिक सम्मान का एकमात्र कारण यही था कि उनकी वाणी इतनी विनम्र और सरल थी। किसी भी धर्म, जाति, वर्ण का मनुष्य अपने जीवन को सफल बना सकता था। गुरू रविदास ने इसी बात पर बल दिया कि ब्राण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी वर्ग के लिये भक्ति के दरवाजे खुले हैं। गुरू रविदास जी कहते हैं कि साधु किसी भी वर्ण का हो, गरीब हो, ईश्वर वहां निवास करता है। ब्राण, वैश्य, शूद्र, डोम, चंडाल, मलेच्छ मन वही है। ये सब भगवान के भजन से मुक्त होते हैं और अपने और दूसरों के कुल को भी तारते हैः

"जिह कुल साधु बैसनौ होई

बरन अबरन रंकू नहीं ईसरू विमल बासु जानी ऐ जागी सोई

ब्रहमन बैस सूद्र अरूख्यत्री डोम चंडार मलेच्छ मन सोई।

होई पुनीत भगवंत भजन से आपु तारि तारै कुल दोई।।"7

संत रविदास के सन्दर्भ में डा. नरेश लिखते हैं– "रविदास वाणी में चित्रित समाज उनकी कविता को अनुभव से जोड़ता है। यह अनुभव व्यक्तिगत भी है और सामूहिक भी। सामूहिक इसलिये कि सामाजिक प्राणी के तौर पर कवि जो कुछ भी रचता है, उसमें उसकी ऐसी अनुभूति प्रकट होती है। इस प्रकार रविदास जी की वाणी का आधार कवि का व्यक्तिगत अनुभव है, जो व्यक्तिगत होते हुए भी सामूहिकता के गुण से संयुक्त है।8 इस प्रकार संत कवि समाज में हो रहे अन्याय के विरूद्ध खंडनात्मक और मंडनात्मक तरीके से मानव कल्याण के खातिर न्याय के लिये आवाज़ उठाते थे।

भारतीय समाज जो अपनी संस्कृति के कारण पूरे विश्व में ख्याति थी। समाज के चन्द स्वार्थी प्रतिष्ठित लोगों ने वर्ण व्यवस्था का दुरूप्योग कर समाज को विभाजित कर दिया। इस प्रकार मध्य युगीन समाज का विभाजन पूरे देश के लिये अभिशाप सिद्ध हुआ। डॉ. चन्द्रदेव राय कहते हैंः– "कोई जन्मना ऊँचा और कोई नीचा समझा जाने लगा हिन्दू धर्मावलम्बियों का सम्पूर्ण नेतृत्व ब्राहम्ण वर्ग के हाथ चला गया और शूद्रों की घोर अवहेलना की परिस्थिति तैयार हो गई। उन्हें अन्त्यज करार दिया गया और उन का स्पर्श तक अपित्र समझा जाने लगा। यह वर्ग सामाजिक और आर्थिक दोनों दृष्टियों से अत्यन्त उपेक्षित बन गया। स्वास्थ्य नाशक एवं घृणास्पद सेवा कार्यों की लक्ष्मण रेखा ने उनके बौद्धिक और मानसिक सामर्थ्य को बांध दिया था। उन्हें सदा ही उच्च वर्ग की कृपा का मुखापेक्षी बना रहना पड़ता था।9

संत रविदास ने वर्ण व्यवस्था का समर्थन नहीं किया, बल्कि समता भाव, समदर्शिता का संदेश, कर्म–अकर्म पर विचार कर मानवतावाद पर बल देकर समसामयिक समाज को अपनी विनम्र

वाणी से आलोकित किया हैः–

मरम कैसे पाइबो रे, पंडित क्यूं न कहै समझाइ।

तातै मरौ आवागमन बिलाई।

बहुत बिधि धरम निरूपाऐ करता दसै सब कोई।

जिहि घट में पूम छूटि है, सोधरम नहीं चीन्हे कोई।

करम–अकरम विचारिए, सुनि–सुनि बेद पुरान।

संसा सदा हिरदै बसै हरि बिन कौन है रे अभिमान।10

गुरू रविदास ने मनुष्य के थोथेपन और रूढ़िग्रस्त समाज को सहज शब्दों में अंधविश्वासों से दूर रहने की नसीयत दी हैं :

जिन थोथरे पिछौरे कोई, जो परिछौरे कण हो कई।

झूठो रे यहु तन झूठी माया, झूठा हरि बिन जन्म गंवाया।

झूठा रे मंदर भोग विलासा, कहि समझावै जन रैदासा

थोथा पंडित थोथा वाणी, थोथी हरि बिन सबै कहानी।

थोथा मन्दिर भोग विलासा, थोथी आन देव की आसा।

साचा सुमरिन नाव विश्वासा, मन वच कर्म कहै रैदासा।11

थोथापन त्यागकर अपने भीतर की आत्मा बचा लो। मैं हिन्दू हूँ, मैं मुसलमान हूँ, मैं ईसाई हूँ। इस प्रकार के विचार त्याग कर धर्म की आत्मा बचा कर अंतःकरण की आवाज पहचानो। जीवन का मोह, स्वपन सब थोथा है। जब तक अहं त्याग कर राम से नाता नहीं जोड़ा तो धन, पद, प्रतिष्ठा सब व्यर्थ है। थोथे पंडित के पांडित्य तो केवल सांसारिक लोग है। स्वानुभाव के बिना ज्ञान की बातें सब व्यर्थ है। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा आदि सब थोथे हैं। मनुष्य की आशाएँ देवता पूरी नहीं करेगा। अपितु परमात्मा के प्रति श्रद्धा भाव से स्मरण ही जीवन की वास्तविकता है। मनुष्य की आशा, वासना ने ही सांसारिक देवताओं की ईजाद की है। इसलिये थोथेपन में उलझना जीवन की सार्थकता नहीं केवल भ्रम है।

सन्त न केवल समाज सुधारक थे अपितु मानव चरित्र सुधारने के लिये मानवतावाद का भी संदेश दिया। आचार्य परशु राम चतुर्वेदी के शब्दों में "उनकी एकेश्वरवादी भावना, सामाजिक भेदभाव विहीनता तथा धार्मिक समानता के वैशिष्ट्य ने यहां की दलित, परिगणित, पिछड़ी हुई जातियों में एक नवीन आशा का संचार किया, जससे उनमें नवजागरण एवं स्वाबलम्बन का भाव उठने लगा और उनकी प्रतिक्रिया में यहां के उच्चवर्गीय लोगों को भी अपने नियन्त्रण के नियम ढीले करने पड़ गए। फलतः भारतीय समाज की सामूहिक संत रविदास मनोवृति का झुकाव क्रमशः लोकोन्मुख होता गया।"12 का अविभाव ऐसे समय में हुआ, जब हिन्दू और इस्लाम धर्म विषम परिस्थितियों से गुजर रहा था। संतों ने दोनों धर्मों के वैमनस्य को देखकर उनमें समन्वय ला कर संकीर्ण मानसिकता को दूर करने का जो कार्य अपनाया वह आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उस युग में थी। उन्होंने सामान्य को जो कर्मकांड की अपेक्षा मानव को मानवता और नैतिकता का मार्ग दिखाया। उन्होंने सदाचार के जीवन का मर्म स्वीकार करते हुए कहा है :

"संत संतोष अरू सदाचार जीवन को आधार

रविदास भये न देवते, जिन तिआगे पंच विकार।"13

संत रविदास तत्कालीन परिस्थितियों से पूर्णतया परिचित थे इसलिये उन की वाणी ने करूणा और शान्त भाव से समाज के लिये अनुकूल संदेश दे कर मानवतावाद का प्रचार किया। आने वाले समय में लाखों करोड़ों लोगों में विरला ही कोई व्यक्ति होगा जो निष्काम भक्ति, निस्वार्थ सेवा, दान, करुणा भाव का

निर्वहन करेगा। मानव–मानव में प्रेम भाव, परहित भावना कम देखने को मिलेगी। राष्ट्र हित की अपेक्षा स्वहित के लिए आदर्श को मुखौटा पहने हुए तृष्णा सुख की जननी को आधार बना कर वासना में मन अनुरक्त रहेगा। ऐसी परिस्थितियों में सन्त साहित्य का अध्ययन आवश्यक है, ताकि मानव की खोई हुई गरिमा पुनः जीवित हो उठे। अपने भीतर की ज्योति से पूरे ब्रांड को आलोकित कर सके।

संत रविदास और समकालीन सन्तों ने एक वर्गविहीन और अखण्ड समाज की कल्पना की। वे समाज में व्याप्त रूढ़िवादी परम्पराओं और कुरीतियों के विरूद्ध थे। संत रविदास ने जब अछूत वर्ग को धार्मिक संस्थानों में जाने के लिये द्वार बन्द देखा तो उनका दिंय द्रवित हो उठाः

अैसी भगति न होई रे भाई।

राम नाम बिन जो कुछ करिये, सो सब भर्म कहाई।

भक्ति न मूंड मुडाये, भगति न माला दिशायें।

भगति न चरण घंरूवाये में सब गुनीजन कहाई।

आपौ गयौ तब भगति पाई, अैसा है भगति भाई।

राम मिलयौ आपौ गुण शौयों, रिधि सिद्धि सबै जुगबाई।

कहै रैदास छूटिलै आसपास, तब हरि ताहि कै पासा।

आत्मा अस्थिर तब सब निधि पाई।14

डॉ. हुकुमचन्द राजपाल के शब्दों में "संत रविदास जी ने युग वास्तविकता को समझा, परस्पर भेदभाव के कटु अनुभवों को भोगा। तदुपंरात आत्मविश्वास एवं संयम से कार्य लेते हुए लोगों को अपनी नवीन जीवन दृष्टि प्रदान की– वस्तुतः उनका यही जीवन दर्शन उनके अमर संत होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। आज संत रविदास किसी वर्ग विशेष के नहीं, समस्त भारतीय जनमानस के प्रेरक है।"15

संत रविदास का जन्म मानव कल्याण के लिए ही हुआ। उन की दृष्टि में हिन्दू, मुस्लिम, ऊँच–नीच में कोई भेद नहीं है। वे हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिये, जाति–पाति के खाई को पाटने के लिये निरंतर प्रयत्नशील थे, जो उनका मानवतावादी दृष्टिकोण था। उन्होंने मानवता के आगे जन, पद, मान, प्रतिष्ठा आदि को लघु बताया। उनके अनुसार मानव–मानव सब समान है, मानवता के मार्ग में सब से बड़ी बाधा जाति भेद बता कर हिन्दू मुस्लिम के बीच ऊँच–नीच व छुआछूत की ऊँची दीवारों को गिराकर मानवतावादी दृष्टिकोण का परिचय दिया। संत रविदास आदर्श समाज के लिये मानवतावाद के प्रबल समर्थक थे उनके मानवतावाद के सम्बन्ध में प्रो. प्रीतम सिंह का विचार है :

"इसमें कोई सन्देह नहीं कि मध्यकालीन साहित्य में जात–पात तथा कर्मकांडी प्रकार के सामाजिक सदाचार तथा धार्मिक प्रबन्ध को शुरू से ही नकारा गया है। परन्तु जिस भरोसे के उभार की बात हमने आरम्भ में की है, मध्यकालीन भारतीय सामाजिक दृश्य प्रत्यक्ष विशेषता दलित जातियों में सेहतमंद धार्मिक तथा सांस्कृतिक भरोसे का उभार था। इसका प्रकटीकरण दलित साहित्यकारों द्वारा नकारा या खण्डन से अधिक उनके सर्वकल्याण मानवतावाद जैसे सामूहिक प्रयत्न से होता है।"16

मानव–मानव में संवेदना, आत्मीयता, करूणा की भावना प्रस्फुटित हो और समस्त विश्व को एक आध्यात्मिक बन्धुत्व में बंधा हुआ देखे। संत रविदास के विचार आज भी किसी राष्ट्र या समाज में प्रचलित अर्न्तविरोधी एवं समस्याओं का समाधान निकाल कर मानव की खोई हुई गरिमा वापिस ला सकती है। आज का समाज जाति–पाति, भ्रष्टाचार, घृणा, द्वेष, आतंकवाद, नक्सलवाद, मौलिक प्रतिभा का हनन, प्रकृति समस्याओं से जूझ कर नैतिक मूल्यों को खोता जा रहा है। भारत जैसे प्रजातांत्रिक राष्ट्र में जनता की सेवा करने वाले चन्द स्वार्थी राजनितिज्ञ जो सता में आने के बाद राष्ट्र सेवा के नाम पर विदेशी बैंकों में पैसा जमा कर सवा अरब भारतीयों की भावनाओं के साथ बलात्कार करते है। मनुष्य को इस प्रकार की परिस्थितियों से निजात दिलाने के लिए मानवतावाद का पुनर्व्यवस्था अपरिहार्य है। संत रविदास का काव्य मानव को मानवतावाद के मार्ग में ले जाने में सहायक हो सकता है। कोई भी राष्ट्र अगर मानवतावाद के पथ पर चलने की कोशिश करेगा। उससे न केवल इस देश का नहीं सम्पूर्ण विश्व का कल्याण सम्भव है। इसलिय आज सम्पूर्ण मानव जाति को मानव कल्याण एवं अस्तित्व प्रदान करने के लिये संत रविदास के काव्य का अध्ययन कर उसे व्यावहारिकता में लाना अनिवार्य है। ताकि जिस भारत ने अध्यात्म, ध्यान, दर्शन, योग के क्षेत्र में पूरे विश्व का नेतृत्व किया, वह भारत फिर से विश्व का सिरमौर बन जाये।

संदर्भ :

1. फादर कामिल बुल्के, अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश, पृ. 304.

2. एस पोपोव, मानवतावाद और समाजवाद, पृ. 5.

3. हिन्दी साहित्य कोश, पृ. 369–70.

4. रैदास समग्र – सम्पादक डॉ. युगेश्वर, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन वाराणसी, पृ. 85.

5. वही, पृ. 86

6. वेणी प्रसाद शर्मा, संत रविदास की भक्ति साधना, पृ. 15.

7. रैदास समग्र, सम्पादक डॉ. युगेश्वर, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन वाराणसी, पृ.125.

8. डॉ. नरेश, पंजाबी दुनिया, गुरू रविदास विशेषांक, जून – जुलाई, 1977, पृ. 4.

9. डॉ. चन्द्रदेव राय : कबीर ओर रैदास – एक तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 8.

10. रैदास समग्र, संपादक डॉ. युगेश्वर, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन, वाराणसी, पृ. 115.

11. वही, पृष्ठ 108.

12. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएं, पृ. 34.

13. आचार्य पृथ्वी सिंह—रविदास दर्शन, पृ. 161.

14. रैदास समग्र सम्पादक डा. युगेश्वर, वाराणसी, पृ. 71—72.

15. डॉ. हुकुमचन्द राजपाल : गुरू रविदास वाणी और महत्व : सम्पादक डॉ. मीरा गौतम, पृ. 128.

16. प्रो. प्रीतम सिंह : मुख बन्ध—संत रविदास स्त्रोत पुस्तक पंजाबी सं. जसवीर सिंह, पृ. 7—8.